सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएँ
(Characteristics Of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम यहाँ उसकी विशेषताओं का उल्लेख करेंगे —

(1) सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है (The nature of social change is social)—इसका अर्थ यह है कि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध किसी व्यक्ति-विशेष, समूह-विशेष, संस्था, जाति एवं प्रजाति तथा समिति में होने वाले परिवर्तन से नहीं है। इस प्रकार का परिवर्तन तो व्यक्तिवादी प्रकृति का होता है जबकि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध समुदाय एवं समाज में होने वाले परिवर्तन से है। इस सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक है न कि वैयक्तिक। समाज की किसी एक इकाई में होने वाले परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन नहीं कहा जा सकता।

(2) सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है (Social change is a universal phenomenon)— इसका तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन एक सर्वव्यापी घटना है, यह सभी समाजों एवं सभी कालों में होता रहता है। मानव समाज के उत्पत्ति काल से लेकर आज तक इसमें अनेक परिवर्तन हुए हैं और आगे भी होते रहेंगे। मानव इतिहास में कोई भी ऐसा समाज नहीं रहा जो परिवर्तन के दौर से न गुजरा हो और पूर्णत: स्थिर व स्थायी हो। कोई भी समाज परिवर्तन का अपवाद नहीं है। यह हो सकता है कि विभिन्न कालों एवं समाजों में परिवर्तन की प्रकृति, गति एवं स्वरूप में अन्तर हो।

(3) सामाजिक परिवर्तन अवश्यम्भावी एवं स्वाभाविक है (Social change is inevitable and natural)—प्रत्येक समाज में हमें अनिवार्य रूप से परिवर्तन दिखायी देता है और यह एक स्वाभाविक घटना है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और समाज भी प्रकृति का एक अंग होने के कारण परिवर्तन से कैसे बच सकता है। कई बार हम परिवर्तन का विरोध करते हैं, परिवर्तन के प्रति अनिच्छा प्रकट करते हैं, फिर भी परिवर्तन को रोक नहीं सकते। कभी ये परिवर्तन जान-बूझकर नियोजित रूप में लाये जाते हैं तो कभी स्वत: ही उत्पन्न होते हैं। मानव की आवश्यकताओं, इच्छाओं एवं परिस्थितियों में परिवर्तन होने पर समाज में भी परिवर्तन होता है।

(4) सामाजिक परिवर्तनों की गति असमान तथा तुलनात्मक है (Speed of social change is unequal and comparative)— यद्यपि सामाजिक परिवर्तन सभी समाजों में पाया जाता है फिर भी सभी समाजों में इसकी गति असमान होती है। आदिम एवं पूर्व समाजों की तुलना में आधुनिक एवं पश्चिमी समाजों में परिवर्तन तीव्र गति से होता है। यही नहीं बल्कि एक ही समाज के विभिन्न अंगों में परिवर्तन की गति में भी असमानता पायी जाती है। भारत में ग्रामीण समाजों की तुलना में नगरीय समाजों में परिवर्तन शीघ्र आते हैं। परिवर्तन की असमान गति होने का कारण यह है कि प्रत्येक समाज में परिवर्तन लाने वाले कारक भिन्न-भिन्न हैं, सभी में समान कारणों से ही परिवर्तन नहीं आते। एक समाज में एक प्रकार के कारक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं तो दूसरे समाज में दूसरे प्रकार के। हम सामाजिक परिवर्तन की गति का अनुमान विभिन्न समाजों की परस्पर तुलना करके ही लगा सकते हैं।

परिवर्तन का देश, काल एवं परिस्थितियों से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक देश की तुलना में दूसरे देश में, एक समय की तुलना में दूसरे समय में तथा एक परिस्थिति की तुलना में दूसरी परिस्थिति में परिवर्तन की गति भिन्न होती है। भारत में वैदिक काल, अंग्रेजों के काल एवं आधुनिक काल में परिवर्तन समान गति से नहीं हुए हैं क्योंकि इन युगों की परिस्थितियों एवं परिवर्तनों के कारणों में बहुत अन्तर पाया गया है।

(5) सामाजिक परिवर्तन एक जटिल तथ्य है (Social change is a complex phenomenon)— चूँकि सामाजिक परिवर्तन का सम्बन्ध गुणात्मक परिवर्तनों (Qualitative changes) से है, जिनकी कि माप-तौल सम्भव नहीं है, अत: यह एक जटिल तथ्य है। हम किसी भौतिक वस्तु अथवा भौतिक संस्कृति में होने वाले परिवर्तन को माप-तौल के आधार पर प्रकट कर सकते हैं किन्तु सामाजिक मूल्यों, विचारों, विश्वासों, संस्थाओं एवं व्यवहारों में होने वाले परिवर्तनों को मीटर, गज एवं किलोग्राम की भाषा में नहीं माप सकते। अत: सरलता से ऐसे परिवर्तन

का रूप भी समझ म नहीं आता। सामाजिक परिवर्तन में वृद्धि क साथ-साथ उसकी जटिलता में वृद्धि होती जाती है।

(6) सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है (Prediction of social change is not possible)— सामाजिक परिवर्तन क बार में निश्चित रूप स पूर्वानुमान लगाना कठिन है। अत उसक बार मे भविष्यवाणी नही की जा सकती। यह कहना बडा कठिन है कि औद्योगीकरण एव नगरीकरण क कारण भारत मे जाति-प्रथा, सयुक्त परिवार प्रणाली एव विवाह म कौन-कौन स परिवर्तन आयेंग। यह बताना भी कठिन है कि आगे चलकर लागों क विचारों, विश्वासों, मूल्यो, आदर्शों आदि में किस प्रकार क परिवर्तन आयेंगे। इसका यह तात्पर्य नही है कि हम सामाजिक परिवर्तन के बारे मे बिल्कुल ही अनुमान नही लगा सकते अथवा सामाजिक परिवर्तन का कोई नियम ही नही है। इसका सिर्फ यही अर्थ है कि कई बार आकस्मिक कारणो स भी परिवर्तन होते हैं जिनके बार मे सोचा भी नही जा सकता।